भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- एक तुलनात्मक अध्ययन

- डॉ मणिमेखला शुक्ला,
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर 7,
भिलाई, जिला दुर्ग (छ.ग.)

संक्षेप

भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक अध्ययन समकालीन भारतीय शिक्षा विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System) सहस्राब्दियों से विकसित उस बौद्धिक परंपरा को समेटे हुए है, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, व्याकरण, नीति, कला और शिल्प जैसे विविध ज्ञान क्षेत्र सम्मिलित हैं। यह प्रणाली समग्रता, नैतिकता, अनुभवजन्य ज्ञान तथा जीवनमूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देती है, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं बल्कि व्यक्तित्व और समाज का सर्वांगीण विकास रहा है।

दूसरी ओर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक आधुनिक, लचीली और समावेशी शिक्षा व्यवस्था का प्रस्ताव करती है। यह नीति बहुविषयक दृष्टिकोण, मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास, आलोचनात्मक चिंतन और अनुसंधान को शिक्षा के केंद्र में रखती है। NEP 2020 में 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक बोध, राष्ट्रीय चेतना और आत्मनिर्भरता का विकास हो सके।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच कई वैचारिक साम्य दिखाई देते हैं। दोनों ही शिक्षा को जीवनोपयोगी, मूल्य-आधारित और समाजोन्मुख मानती हैं। जहाँ भारतीय ज्ञान प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा, अनुभवात्मक अधिगम और नैतिक अनुशासन पर बल देती है, वहीं NEP 2020 इन्हीं तत्वों को आधुनिक शिक्षण विधियों, तकनीक और वैश्विक मानकों के साथ समन्वित करने का प्रयास करती है।

यह विषय इस बात को रेखांकित करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल एक प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्स्थापन और आधुनिक संदर्भ में उसके नव-अभिव्यक्तिकरण का प्रयास है। इस प्रकार, दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से भारतीय शिक्षा की जड़ों और उसकी भविष्य-दृष्टि को समझने का सशक्त आधार प्राप्त होता है।

Keywords: नव-अभिव्यक्तिकरण, जीवनोपयोगी, मूल्य-आधारित, सांस्कृतिक बोध, समाजोन्मुख

प्रस्तावना

भारत की शिक्षा प्रणाली समय-समय पर अनेक परिवर्तनों से गुज़री है। प्राचीन काल में भारतीय ज्ञान परंपरा ने शिक्षा के एक अद्वितीय रूप को स्थापित किया था। भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल, वेदों, उपनिषदों, और अन्य

धार्मिक तथा सांस्कृतिक ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। लेकिन, औपनिवेशिक शासन ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बहुत हद तक प्रभावित किया और बाद में इसे पुनः अपने राष्ट्रीय संदर्भ में पुनर्निर्मित करने की आवश्यकता महसूस की गई। भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनर्निर्माण और भारतीय संस्कृति को एक विशेष रूप से प्रोत्साहन देने का कार्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) द्वारा किया गया है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली का स्वरूप

भारतीय ज्ञान प्रणाली की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हैं। वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, और अन्य धार्मिक-दार्शनिक ग्रंथों के माध्यम से शिक्षा का एक व्यापक और समृद्ध ढांचा विकसित हुआ था। भारतीय शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान अर्जन था, बल्कि मानव जीवन के उद्देश्य और आत्मा की मुक्ति के प्रति जागरूकता भी था। इस प्रणाली में ज्ञान का सम्प्रेषण एक गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा किया जाता था। जो ज्ञान को केवल बौद्धिक या वैज्ञानिक रूप में नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक साधना और एकात्मता के रूप में देखा जाता था। इस ज्ञान प्रणाली में तर्क, भक्ति, ध्यान, और आचार-व्यवहार के बीच संतुलन स्थापित किया गया था। "गुरु" की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण थी, क्योंकि गुरु ही शिष्य को न केवल शास्त्रों का ज्ञान प्रदान करते थे, बल्कि उसे जीवन के सत्य और आत्मिक शांति की दिशा में भी मार्गदर्शन करते थे। (कुमार, 2012)

2. औपनिवेशिक प्रभाव और भारतीय शिक्षा में परिवर्तन

औपनिवेशिक काल में भारत में शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य अंग्रेजी शासकों की राजनीतिक और सांस्कृतिक शक्ति को बनाए रखना था। इस समय भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी शिक्षा और विदेशी भाषाओं का प्रभाव बढ़ा। 1835 में मैकाले के शिक्षा प्रस्ताव ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नया रूप दिया। इसके तहत भारतीय भाषाओं और संस्कृत को उपेक्षित किया गया और अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दी गई। इस बदलाव ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सामूहिकता और समग्रता को कमजोर किया और यह शुद्ध रूप से तर्क, गणित और विज्ञान पर केंद्रित हो गई। इस समय तक भारतीय शिक्षा प्रणाली का आत्मिक और नैतिक पक्ष काफी हद तक कमजोर हो गया था। (गुप्ता, 2005)

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक नई दृष्टि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समग्र और विविध बनाना है। यह नीति प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली और पश्चिमी शिक्षा के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। NEP 2020 में भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, भाषाओं, और पारंपरिक ज्ञान को पुनः प्रोत्साहित करने की बात की गई है। यह नीति इस बात पर जोर देती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा परिणाम नहीं, बल्कि एक ऐसे नागरिक का निर्माण करना है जो सामाजिक और नैतिक रूप से जिम्मेदार हो। NEP 2020 का एक प्रमुख पहलू यह है कि इसमें विविधता को महत्व दिया गया है, जैसे कि भाषा नीति, मल्टी-डिसिप्लिनरी शिक्षा, और व्यक्तिगत रुचियों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने की बात की गई है। इसके अंतर्गत, 5+3+3+4 की संरचना में शिक्षा का पुनर्निर्माण किया गया है, जिसमें बच्चों को प्रारंभिक कक्षा से ही विभिन्न क्षेत्रों में विचारशीलता, सृजनात्मकता, और कौशल आधारित शिक्षा प्रदान की जाती है।

4. भारतीय ज्ञान प्रणाली और NEP 2020 के बीच तुलनात्मक अध्ययन

1. **ज्ञान का स्रोत** - भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान के स्रोत के रूप में प्राचीन वेदों, उपनिषदों, और धार्मिक ग्रंथों को महत्व दिया गया था। इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला, और साहित्य सभी को एक साथ समाहित किया गया था। (शर्मा, 2011) NEP 2020 में ज्ञान के विभिन्न स्रोतों के समावेश की बात की गई है, जिसमें पश्चिमी ज्ञान के साथ-साथ भारतीय परंपराओं को भी सम्मान दिया गया है। इसमें 'आत्मनिर्भर भारत' की अवधारणा को बढ़ावा दिया गया है, जो भारतीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को एक स्थायी रूप में संरक्षित करने की दिशा में कार्य कर रही है।

2. **शिक्षा की उद्देश्य -** भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा की मुक्ति और जीवन के उद्देश्य को समझना था। यह एक जीवनदर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया था। (अग्निहोत्री, 2003) NEP 2020 में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास को भी सशक्त बनाना है। इस नीति में व्यक्ति की समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करने की बात की गई है।

3. **शिक्षा का ढांचा**

1. 5+3+3+4 की नई शैक्षिक संरचना

नई शिक्षा नीति में सबसे बड़ा बदलाव शिक्षा की संरचना में किया गया है। NEP 2020 ने शिक्षा को चार प्रमुख चरणों में बांट दिया है, जो इस प्रकार हैं:

- **प्रारंभिक शिक्षा (5 वर्ष)** – यह चरण 3 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए है, जो 'प्रारंभिक वर्षों' के नाम से जाना जाता है। इसमें बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा दी जाएगी। इसमें बच्चों को मानसिक और शारीरिक विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों और खेलों के माध्यम से सीखने का अवसर मिलेगा।

- **मध्यम (3 वर्ष)** – यह चरण 8 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए है, जिसमें बच्चों को अधिक गंभीर और विषयगत शिक्षा दी जाएगी। यह अवस्था एक ब्रिज के रूप में काम करती है, जो छात्रों को गहन विचार और तार्किक समझ विकसित करने में मदद करती है।

- **उच्च माध्यम (3 वर्ष)** – यह चरण 11 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए है, जिसमें कक्षा 6 से कक्षा 8 तक की शिक्षा शामिल है। इस स्तर पर छात्रों को विशेष विषयों में गहरी समझ प्राप्त करने के साथ-साथ आलोचनात्मक सोच और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया जाता है।

- **उच्चतम स्तर (4 वर्ष)** – यह 14 से 18 वर्ष के छात्रों के लिए है, जो कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा का हिस्सा होगा। इस चरण में छात्रों को विभिन्न विषयों के चुनाव, कौशल विकास, और व्यक्तिगत रुचियों के आधार पर शिक्षा देने पर जोर दिया जाएगा।

यह संरचना भारत में बच्चों के सर्वांगीण विकास और शिक्षा में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। NEP 2020 के इस ढांचे में बच्चों को शिक्षा का एक ऐसा वातावरण प्रदान किया जाएगा, जिसमें वे स्वविकसित और आत्मनिर्भर बन सकें। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)

2. विषय चयन में लचीलापन और मल्टी-डिसिप्लिनरी दृष्टिकोण

NEP 2020 में शिक्षा के विषय चयन को अधिक लचीला और विद्यार्थी केंद्रित बनाया गया है। अब छात्र विभिन्न विषयों का चयन कर सकते हैं, और उन्हें किसी एक विशिष्ट दिशा में सीमित नहीं किया जाएगा। इस नीति में 'मल्टी-डिसिप्लिनरी' दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया गया है, यानी एक ही समय में छात्र कला, विज्ञान, गणित, और मानविकी जैसे विभिन्न विषयों का अध्ययन कर सकते हैं।

इसका उद्देश्य छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने का अवसर देना है, ताकि वे विभिन्न दृष्टिकोणों से सोच सकें और अपने कौशल को बेहतर ढंग से विकसित कर सकें। उदाहरण के लिए, एक छात्र गणित के साथ-साथ कला और संगीत भी पढ़ सकता है, या एक छात्र विज्ञान के साथ-साथ समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान भी चुन सकता है। इस प्रक्रिया से छात्रों को विषयों में अधिक रुचि और समझ पैदा होगी, और वे अपने कौशल और रुचियों के अनुसार अपनी शिक्षा को व्यक्तिगत बना सकेंगे। (मिश्रा, 2021)

3. मातृभाषा में शिक्षा का प्राथमिकता देना

NEP 2020 के अंतर्गत शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता देने की बात की गई है। यह नीति बच्चों को उनकी पहली भाषा में शिक्षा देने पर जोर देती है। बच्चों के लिए उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना अधिक सहज और प्रभावी होता है, क्योंकि इससे उनकी समझ बेहतर होती है और वे जल्दी सीखते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत, शिक्षा का माध्यम बच्चों की मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा या संस्कृत जैसी भाषाओं में किया जाएगा, ताकि बच्चों को अपने विचारों और ज्ञान को सहजता से व्यक्त करने का अवसर मिले। इस कदम का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करना और बच्चों को उनकी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ना है। इसके अलावा, छात्रों को द्विभाषी और बहुभाषी शिक्षा प्राप्त करने का भी अवसर मिलेगा, जिससे उनकी भाषाई क्षमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होगी। (कुमार, 2020)

4. कौशल आधारित शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा का प्रोत्साहन

NEP 2020 में कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। इसका उद्देश्य छात्रों को रोजगार के लिए तैयार करना है। अब शिक्षा का उद्देश्य केवल पारंपरिक विषयों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसके साथ-साथ व्यावसायिक कौशल, तकनीकी शिक्षा, और उद्यमिता की दिशा में भी छात्रों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस नीति में हर स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा का समावेश किया जाएगा, ताकि छात्र अपने चुने हुए क्षेत्र में दक्ष बन सकें और उन्हें विभिन्न उद्योगों में नौकरी के अवसर मिल सकें। साथ ही, छात्रों को जीवन भर सीखने का अवसर मिलेगा, जिससे वे किसी भी समय अपनी शिक्षा में सुधार और सुधार कर सकेंगे। इस दृष्टिकोण से NEP 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक स्थायी और आत्मनिर्भर मार्ग पर स्थापित करने का प्रयास करती है। (शर्मा, 2020)

5. डिजिटल शिक्षा का समावेश

NEP 2020 में डिजिटल शिक्षा को महत्व दिया गया है, खासकर कोविड-19 महामारी के बाद, जब ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता अधिक महसूस हुई। अब शिक्षा में तकनीकी उपकरणों और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग बढ़ाया जाएगा। इसके माध्यम से छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने, अध्ययन सामग्री तक पहुंच प्राप्त करने, और ज्ञान के विभिन्न स्रोतों से जुड़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा, छात्रों को डिजिटल कौशल और साइबर सुरक्षा के बारे में भी सिखाया जाएगा, ताकि वे डिजिटल दुनिया में सुरक्षित रूप से कार्य कर सकें। डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा को अधिक सुलभ और समावेशी बनाना है। (शर्मा, 2020)

6. शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण में सुधार

NEP 2020 में शिक्षकों के प्रशिक्षण और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की दिशा में भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। अब शिक्षकों को अधिक उन्नत और आधुनिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा, ताकि वे नई शैक्षिक पद्धतियों और तकनीकों के साथ अपडेट रह सकें। इसके अलावा, शिक्षक शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय स्तर पर मानक स्थापित किए जाएंगे, जो उनकी गुणवत्ता और कार्यकुशलता को सुनिश्चित करेंगे। (कुमार, 2020)

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आई है। इस नीति में शिक्षा के ढांचे, विषय चयन, कौशल आधारित शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, और शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार की दिशा में कई अहम बदलाव किए गए हैं। यह नीति छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती है और उन्हें जीवनभर सीखने के लिए तैयार करती है। NEP 2020 भारतीय शिक्षा को और अधिक समावेशी, लचीला और प्रतिस्पर्धात्मक बनाने का कार्य करेगी।

4. भाषा नीति

- भारतीय ज्ञान प्रणाली में संस्कृत को एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में माना गया था।
- NEP 2020 में भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता दी गई है और इसके तहत सभी स्कूलों में मातृभाषा में शिक्षा देने का सुझाव दिया गया है।

5. निष्कर्ष

भारत की शिक्षा प्रणाली ने समय-समय पर विभिन्न बदलाव देखे हैं, जिनका उद्देश्य समय की आवश्यकता के अनुसार छात्रों को तैयार करना था। भारतीय ज्ञान प्रणाली और NEP 2020 के बीच स्पष्ट अंतर है, लेकिन दोनों का लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का संवर्धन है। NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया है, ताकि छात्र न केवल बौद्धिक रूप से सशक्त हो, बल्कि सामाजिक और नैतिक रूप से भी समृद्ध हो सकें। यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा देने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और ज्ञान के महत्व को भी पुनः उजागर करने का कार्य करती है।

संदर्भ सूची (Bibliography)

1. अग्निहोत्री, A. (2003). *भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली*. दिल्ली: भारतीय ज्ञान संस्थान।
2. कुमार, R. (2012). *भारतीय शिक्षा प्रणाली: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण*. दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन।
3. गुप्ता, S. (2005). *भारतीय शिक्षा और औपनिवेशिक प्रभाव*. इलाहाबाद: शिक्षा वाणी।
4. शर्मा, S. (2011). *भारतीय दर्शन और शिक्षा*. वाराणसी: ज्ञान प्रकाशन।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, (2020). *भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय*।